International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(3): 07-12

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(3): 07-12
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 12-02-2015
Accepted: 03-03-2015

राघवेन्द्र
(शोधच्छात्र) संस्कृतविभाग दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

आधुनिक संस्कृत साहित्य में नवीन छन्द

राघवेन्द्र

1. भूमिका – छन्द कविता का नादमय सौन्दर्य है जिस प्रकार नदी के तटवर्ती भाग नदी के जल को एक निश्चित सीमा में प्रवाहित होने के लिए बाधय करते हैं, उसी प्रकार छन्द भी कवि की काव्यधाारा को नियन्त्रित करते हैं। छन्द को काव्यविधाान के लिए उपयुक्त व्यवस्था भी कहा जा सकता है। संस्कृत साहित्य का छन्दों का वैभव इतना विस्तृत है, कि इसे स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में मान्यता दी गयी है।

संस्कृत साहित्य का आद्य स्रोत तथा मूलाधाार वेद शब्दराशि है तथा इस अपौरुषेय शब्द राशि को 'छन्दः' शब्द से व्यवहृत किया गया है। छन्द शास्त्र को षड्वेदाङ्ग में पुरुष के पाद रूप में कल्पना की गयी है – **'छन्दः पादौ तु वेदस्य'** इस वचन के अनुसार छन्दस्तत्त्व वेद पुरुष का गतिकारक पादाङ् है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य वाङ्मय का आध्यात्मिक मूल आधाार छन्दों में सुरक्षित है। परवर्ती संस्कृत–कवियों ने अपने कालजयी महाकाव्यों तथा रचनाओं को विविध छन्दों से समृद्ध करते हुए छन्दोविचिति की आधिभौतिक अपरिहार्यता का प्रमाण प्रस्तुत किया है।

2. छन्द शब्द का अर्थ – छन्द स्वरूप परिपालन के सन्दर्भ में प्राचीन काल से ही दो सिद्धान्त प्रचलित हैं। नैरुक्त सिद्धान्त और वैयाकरणसिद्धान्त । निरुक्तकार छन्दः शब्द की व्युत्पत्ति ''छाद्यते छन्द्यते वा अनेन'' करते हैं। वैयाकरणों ने ''छन्द्यते अनेन'' इस प्रकार की व्युत्पत्ति की है। इन दोनों सिद्धान्तों में शब्दगत प्रकृतिवैशिष्ट्य ही विचार वैभिन्न्य का मूल है। निरुक्तकारों ने अपौरुषेय वेद शब्दराशि को लक्षित करके छन्दः शब्द की व्युत्पत्ति की है। किन्तु व्याकरणशास्त्रकारों ने लौकिक शब्दसङ्घात के आधार पर छन्दशशब्द की व्युत्पत्ति की है। छन्द विभाग की दृष्टि से वैदिक और लौकिक भेद से छन्द दो प्रकार के हैं – वैदिक छन्दों में सात मुख्य छन्द – **गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जगती** हैं और चौदह अतिछन्द, अतिजगती, शक्वरी आदि कुल इक्कीस छन्द हैं। लौकिक छन्द लघु, गुरु, मात्रा और वर्णादि का नियामक होता है। वह भी मात्रा और वर्ण के भेद से दो प्रकार का है। कुछ लोग मात्रा–छन्द और गण छन्द इस प्रकार दो विभाग करते हैं।

3. आधुनिक संस्कृत में छन्द प्रयोग – आधुनिक संस्कृत काव्य में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है, उसमें छन्दों पर किये गये नव प्रयोग भी उल्लेखनीय हैं। भले ही वह देशी छन्द की बात हो अथवा विदेशी छन्दों की, कवि ने छन्द शास्त्र की परम्परा से चार कदम आगे बढ़कर स्वयं को लोकधर्मी सिद्ध करने का प्रयास किया है। अतः इस नवप्रयोग में जो भारत की जमीन से जुड़े छान्दस नवप्रयोग हैं, उन्हें लोकधर्मी छन्द कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य में आधुनिक काल को प्रो॰ मिश्र के कथनानुसार हम नवजागरण काल कह सकते हैं। छन्दो विधान के क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में सर्वाधिक नये प्रयोग किये गये। भारतेन्दु ने तो संस्कृत में लावनी भी लिखी यद्यपि उनकी लावनी की भाषा तुलसीदास के संस्कृत पद्यों की भाँति अशुद्ध है। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने ब्रजभाषा के छन्दों में दोहा, सोरठा, सवैया, घनाक्षरी आदि के साथ उर्दू के काव्य से गजल का छन्द लेकर सफल काव्य रचनाएँ प्रस्तुत करते हुए जगन्नाथ पाठक, राजेन्द्र मिश्र, बच्चूलाल अवस्थी, इच्छाराम द्विवेदी, रमाकान्तशुक्ल आदि कवियों ने संस्कृत कविता को नया धरातल दिया। अनेक कवियों ने लोकगीतों के संस्कारों से अनुप्रणित होकर संस्कृत काव्यरचना में अभिनव प्रयोग किये। श्रीभाष्यम् विजयसारथि ने तेलगु भाषा के लोकप्रचलित संस्कृत रचनाएँ बहुत सराही गयी हैं।

4. लोकधर्मी छन्द – लोकधर्मी छन्दों को प्रयोग करने का उद्देश्य परम्परागत छन्दशास्त्र का उल्लंघन करना अथवा उसकी अवहेलना नहीं था, अपितु संस्कृत को जन–जन से जोड़ना है। जब संस्कृत के

ब्वततमेचवदकमदबम
राघवेन्द्र
(शोधच्छात्र) संस्कृतविभाग दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

छन्दों में तत्कालीन समाज और संस्कृत की महक सुवासित होती है, जो वह व्यक्तियों को खुद से जोड़ लेती है। वहाँ के आंचलिक छन्द–लय के कारण अपरिचित भाषा को भी आत्मसात् करने की क्षमता रखते हैं। इन छन्दों में सौहर, रसिया, लोरी, गजल, कजरी, कव्वाली आदि लोक–गीत सम्मिलित हैं। क्योंकि यह गीत जनपद गाँव तथा स्वजातीय परम्परा के अनुसार कण्ठ–ध्वनि के वैशिष्ट्य से गाये जाते हैं। अतः इन्हें लोक–गीत कहते हैं। जनपद के अनुसार रसिया लोक–गीत ब्रजक्षेत्र में, बाउल बंगाल में, पण्डवानी छत्तीसगढ़, रागिणी हरियाणा, फाग उत्तर प्रदेश, डाण्डिया गुजरात में गाया जाता है। इन लोकधर्मी तथा वैदेशिक छन्दों का संस्कृत में नवप्रयोग निम्न प्रकार से दृष्टावलोकन कर सकते हैं –

4.1 गजल – फारसी या उर्दू काव्य परम्परा के छन्दों का संस्कृत कविता में अवतरण बीसवीं शताब्दी के संस्कृत काव्य की एक विशेषता है। इस दृष्टि से भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने फारसी छन्दःशास्त्र का गहन अध्ययन कर प्रायः बाईस बहरों का प्रयोग करते हुए सैकड़ों गजल–गीतियां लिखीं। **'साहित्यवैभव'** तथा **'गीतिवीथि'** नामक दो काव्य संग्रहों में संकलित गजल गीतियां उन्नीस सौ तीस (1930) ई. में बॉम्बे स्थित निर्णय सागर प्रेस से प्रकाशित हुई। इस समय लोकप्रिय गजल लिखने वाले संस्कृत कवियों में राजेन्द्र मिश्र तथा जगन्नाथ पाठक उल्लेखनीय हैं। अस्तु, संस्कृत में गजल लेखन की परम्परा पिछले साठ–सत्तर वर्षों से अवच्छिन्न रूप से चली आ रही है, इसमें कोई सन्देह नहीं। बच्चू लाल अवस्थी ने गजल लेखन में अपने प्रौढ़ कवित्व का परिचय दिया है यथा –

पिका मौनं भजेरन् भासी वासन्ते कथङ्कारम्।
शरः शाकुन्तलः सिद्धयेन्न दुष्यन्ते कथङ्कारम्?।।
भुवोर्भङ्गभ्रमाद्भूम्ना निषेधः सम्प्रतीयेरन्।
कपोलप्रान्तसङ्केता (निगृह्यन्ते) कथङ्कारम्।।1.

भट्टमथुरानाथ शास्त्री द्वारा रचित गजल द्रष्टव्य है–

विरहाऽपगातमुत्तरं फनरागमिष्यति वा न वा
अपिमानसी मम वेदना विषमा गमिष्यति वा न वा
अपि चन्द्रहासमिमं दधासि जहासि वक्षासि मामके
किमवैषि ते निशितोऽप्यसिर्मयि संचलिष्यति वा न वा।।2.

राजेन्द्र मिश्र ने अपने कवि प्रौढ़त्व को प्रमाणित करते हुए वाग्वधूटी, मृद्वीका, श्रुतिम्भरा एवं मधुपर्णी के प्रणयी कवि ने प्रौढ़त्व के छैनी–हथौड़े से शालभंजिका को गढ़ा है। इसमें झर–झर बहते आंसुओं में प्रिय बिछोह की पीड़ा नहीं, प्रिया से मिलने की तृष्णा नहीं और न ही भोग की चाह है, अब तो सांसारिक कामनाओं के अंकुर सूख गये हैं यह जीवन मुक्ति की तृष्णा में जिया जा रहा है।

शोषमापादिताः सर्वभावाङ्कुराः जीवनं जीव्यते काम्यया साम्प्रतम्।।3
नहि जगदतिरुचिरं त्वया विना जीवतमपि न चिरं त्वया विना।।4
उद्याने यस्मिन् सान्द्रतरौ प्रतिशाखमुलूका वत्गन्ते
कल्याणं तस्य कथं भविता सुषमा क्व वसन्तस्यागमने।।5

इच्छाराम द्विवेदी के 'प्रश्नाचिह्नम्' शीर्षक में लगभग 31 गजल संगृहीत हैं। यथा –

गन्धदानं भुजंगाकुले भूतले यैः कृतं ते स्वयं चन्दनत्वं गताः
ज्वालितं जीवनं यैं परीक्षाग्निमना सर्वदा ते जनाः कांजनत्वं गताः।।6

4.2 कजरी – ठेठ मिर्जापुरी कजरी को संस्कृत में उतारने का उपक्रम अभिराज की अलौकिक कारयित्री प्रतिभा की ही देन है। मंच पर सर्वाधिक रूप से सराही जाने वाली कजरी रौति कोकिला में चौपाल की संस्कृति, ढ़ोलक की थाप, तालियों की लयबद्धता सहसा ही कानों में गूँजने लगती है–

रौति कोकिला मदालसा रसालतरौ गोपिता तमालतरौ रे
क्षणं पल्लवे निलीय मंजरीरसं निपीय
स्तौति सम्मुखं वसन्तकं रसालतरौ गौपिता तमालतरौ रे।।7

4.3 लोरी – शिशु के सिर पर माता का स्नेही स्पर्श जब शब्दों का आकार लेता है तब वह लोरी बन जाता है। राधावल्लभ त्रिपाठी ने **'लोरीगीतम्'** शीर्षक से इस लयेरिका को गाया है। परन्तु इनकी लोरी में कथातत्त्व न होकर ममता का उच्छवास है। द्रष्टव्य –

भद्रे निद्रे धीरे तीरे त्वमवतर मानससरसि नः
शोकविमुद्रे मीलय नयनयुगदलमलं जनस्य
अवतर भगवति निद्रे सुखं मया त्वत्कृते च समास्तृतः
नवशाद्वलसुकुमारः स्रस्तर इव नयनफटः स्वस्य
दीन हीने दुःखाकुलिते श्रमेण च निस्सहगात्रेऽत्र
दयसे त्वमेव शुभ्रे श्रमिकोऽपि कर्षकजने वापि।।8

4.4 कव्वाली (काव्याली) – अर्वाचीन संस्कृत छन्दों में कव्वाली को गजल की भाँति स्वीकार किया है। यद्यपि यह भी उर्दू, फारसी की भूमि से ही उत्पन्न और परिवर्धित है परन्तु संस्कृत साधकों ने अत्यन्त आत्मीय भाव से उसे अपने कलेवर में उतारा है। अभिराज ने **मृद्वीका** में कव्वाली का प्रयोग किया है। यथा –

प्रीतिरास्वाद्यते प्राणैः गीतिरास्वद्यते कर्णैः
शक्तिरास्वद्यते देहैः भक्तिरास्वद्यते स्नेहैः
घनान्धाकारे बलिदीपिकेव बलाहके चंचलचंचलेव।
मधौ प्रफुल्ला नवमालिकेव प्रतीयते प्रतीयते प्रीतिरियं पुराणी।।9

श्रीधर भास्कर वर्णेकर साहित्य संगीत कला के मूर्तिमान विग्रह कहे जा सकते हैं। उन्होंने आधुनिक संस्कृत काव्य को अनेकों रागों में आबद्ध करके अपने संगीत ज्ञान का परिचय दिया है। श्री वर्णेकर ने राग शोभावरी, राग आसावरी, राग फरीयाधनाश्री,राग पूरिया, राग भैरवी की बहुत ही माधुर्य एवं ओज के साथ अभिव्यक्ति की है। रागभैरवी द्रष्टव्य है –

विश्वबन्धुता चिरं विजयताम् एकात्मता दृढं वर्धताम
जगदखिलं कुर्वती पावनं सुप्रसन्नमानन्दकाननम्
परममङ्गलं लोकजीवनं सुधासरिदियं सदा प्रवहताम्।।10

4.5 घनाक्षरी – हिन्दी के प्रसिद्ध छन्द घनाक्षरी को अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने संस्कृत में अत्यन्त ही भव्यता के साथ उतारा है। इस छन्द की गति–यति के साथ उन्होंने पूर्णतः न्याय किया है। पढ़ते समय किसी भी पंक्ति में विशृंखलता अथवा गतिभंग दोष का अनुभव नहीं होता अपितु उसके मूल बन्ध का ही एहसास होता है। यथा –

हृदये समुपैति पदं वर्धते शरीर यत्
नयनाभ्यां नितरां चकास्ति चारुचरणम्
अधरे बिम्बप्रतिमे स्मितकैस्तनुते सुषमां
पदयोर्विदधाति मन्दमन्दं गजगमनम्।।11

भट्ट मथुरानाथशस्त्री का घनाक्षरी प्रयोग दृष्टव्य है –

यस्य पदगुम्फं चिरकालाद् रसयन्तो बुधा
नित्यनवसन्तोषं भजन्तो न ह्युदासते
यस्य श्रव्यकाव्य तथा भव्यं दृश्यकाव्य चाऽपि
सूरिजनश्राव्यं नात्र संशयः प्रकाश्यते।।12

4.6 सवैया – नवछन्द विधाओं के उफपर ब्रजभाषा का प्रभाव अधिकांशतः दिखाई देता है। संस्कृत भाषा की मिठास में जब ब्रजभाषा छन्द की चाशनी घुल जाती है, तो आस्वादन और भी मधुर हो जाता है। शरदऋतु को विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र ने 'सवैया' में उतारकर अत्यन्त मनोहारी बना दिया है–

यमुनावटमंजुलकुंजघने घनसाररसावलिते विपिने
विपिने नवनीरजगन्धयुते युतपंकजकोषमिलिन्द जने
जनमानसमानिनी मोदमुदे मुदिता धरपानपुटे कमने
कमने ननु रासरसे सुविभाति शरत् सखिनैशसरत्पवमे।।

4.7 कुंडलियाँ – कुंडलिया हिन्दी भाषा की एक लोकप्रिय विधा है। 'गिरीधर की कुंडलियों में नैतिक मूल्यों के अनेक बिम्ब खींचे गये हैं। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री अपनी बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने भारतवर्ष के विकास और विश्वबन्धुत्व की भावना को उन्होंने 'कुंडलियाँ' छन्द में प्रस्तुत किया है –

आर्यवसुमती सर्वतः प्रथम विकासमवाप
ततः सकल लोकालये संविद्बीजमुवाप
संविद बीजमुवाप सकलकल्याणं विदती
जगती सभ्यतां दधौ विश्वमैत्रीमवदधती
मानवताद्युतिजागराय जगदेक धृतिमती
द्वीपे द्वीपे दीप्तिमदादियमार्य वसुमति।।13

4.8 सोहर – अभिराज राजेन्द्र मिश्र वास्तव में लोकधर्मी विधाओं के श्रेष्ठ कवि हैं। 'सोहर' गीत की ऐसी विधा है जो मंगलमय अवसरों पर साभिनिवेश गाई जाती है। अभिराज ने वाग्वधूटी में इसका भी उल्लेख किया है। अभिराजयशोभूषणम् में इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि –

पुत्रजन्मविवाहादिमंगलावसरे पुनः।
गीयते ननु नारीभिर्गीतं सूतगृह्याभिधम्।।14

4.9 लोकगीत – ब्रज क्षेत्रा में प्रचलित लोकगीतों को संस्कृत में यथावत् रूप से उतारकर जन–जन में लोकप्रिय बनाने का श्रेय ब्रज के मूर्धन्य साहित्यकार वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी को है। उन्होंने इस प्रकार के अनेकों लोकगीतों को संस्कृत की ऊष्मा से भर दिया है, एक प्रसिद्ध गीत है –

'मैं तो गोवर्धन कूं जाऊं मेरे वीर नाय मानै मेरौ मनुआ'

संस्कृतरूपान्तर –

अहं तु गोवर्धनं गमिष्यामि, मनुते नैव मनो मे

इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्कृत भाषा की लोकप्रियता और जन–जन के कर्णमाधुर्य के लिये कुछ संस्कृत गीतियों को फिल्मी धुन पर आधारित करके लिखा। उनकी एक प्रसिद्ध सरस्वती वन्दना विद्यार्थियों में बहुत लोकप्रिय रही। जिसकी मूलधुन थी –

'तेरी प्यारी–प्यारी सूरत को किसी की नजर ना लगे'

उस पर सरस्वती वन्दना का यह रूप द्रष्टव्य है –

'धनसारतुषार सुहारसिते वरवीणा निनादकरी पाहिमात।
मधुमंजुलतामधुमंजुलता सुतनौ सुतनौ सुतनोतुलता
सततं सतता सुमहास्ययुता मकरन्दसुधाश्रितरागरता
सितवारिजवारिजवेशवृते वरवीणा निनादकरी पाहिमात।
(ब्रजगन्धा)

लोकगीतों की इसी परम्परा में श्रावणगीत, रसिया बटुकगीत आदि का उल्लेख भी आधुनिक संस्कृत काव्य में मिलता है।

4.10 बाउलकाव्य – बंगालदेश में भक्तिकाव्य के रूप में 'बाउलकाव्य' लिखा गया। जिसमें ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति, समर्पण और श्रद्धा को व्यक्त किया गया। हर्षदेव माधव के बाउलकाव्य का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

अथ किम्! मम समीपे नौकाऽसीत्
किन्तु समुद्रभयं मे चेतसि वर्तते स्म
मया नोपयुक्तन सा वायुस्तु सानुकूल आसीत्
किन्तु हृदयमासीन्मृण्मयम्
ध्रुवताराकोऽपि नेत्रयोः पुरतः प्रकाशते स्म
किन्तु
मनः मसृणतयसक्तमासीत्
मनसो मनुष्य ।
तव शब्दोऽपिश्रुतः। (मृगया, पृष्ठ–44)

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में लोकधर्मी छन्दों द्वारा एक नवीन युग का सूत्रपात हुआ। जिसमें छन्दों की मसृणता और नवीनता पर दृष्टि केन्द्रित की गई। इस अवधि में नये भावबोध के साथ रूमानियत और स्वच्छन्द मनः स्थितियों के चित्रण की प्रवृत्ति विकसित हुई और इसी से नवगीत विधा का जन्म हुआ। इसी प्रकार 'नाट्यप्रगीत' कविता भाव भूमि होती है इसमें किसी पात्र के मुख से काव्य की अभिव्यक्ति होती है। इसमें प्रायः कवि आत्मसम्भाषण जैसी उक्ति प्रस्तुत करता है कभी यह उक्ति व्यक्ति विशेष द्वारा अभिनीत होती है तो कभी संवादात्मक शैली में पेश की जाती है। राधावल्लभ त्रिपाठी जी का 'गीतधीवरम्' इसी प्रकार का काव्य है। इस प्रकार आधुनिक छन्द योजना में नाट्य प्रगीत काव्य का भी एक विस्तृत फलक है।

5. संस्कृत साहित्य में वैदेशिक छन्द प्रयोग – छन्दो विधान में बीसवीं शताब्दी में नवीन प्रयोगों का वर्चस्व रहा। क्षेत्रियता के प्रभाव से युक्त छन्द प्रायः लोकप्रिय होते गये। आधुनिक कविता ने एक नये युग का सूत्रपात किया। जिसमें ब्रजभाषा के छन्दों के साथ–साथ उर्दू साहित्य के प्रभाव से अनेक विदेशी छन्दों का संस्कृत में पदार्पण हुआ। जिसमें सानेट, हाइकू, तान्का, सीजो आदि प्रमुख हैं।

5.1 सानेट – संस्कृत में अनेक नाट्य कृतियों के रचनाकार श्री वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य ने संस्कृत कविता का सानेट छन्द से परिचय कराया। सानेट अंग्रेजी कविता का प्रसिद्ध छन्द है। एक सानेट में चौदह पंक्तिया होती हैं और एक ही छन्द में एक कविता पूर्ण हो जाती है। भट्टाचार्य जी ने सानेट संग्रह को कलापिका के नाम से कलकत्ता (1969) में प्रकाशित कराया। वीरेन्द्र कुमार जी ने सानेट का संस्कृत नामकरण 'संस्तबक' किया है। द्रष्टव्य है –

रात्रिान्दिवं में देहमन्दिरेऽस्मिन् साx्चन्त्य विदेहरूपं
पूजार्चनार्थं वर्तते हि चेतोदेव्या ननु वाx्छतायाः
प्रज्ज्वाल्य दीपं कल्पनाप्रतीकं स्निग्धx्च हृदार्तिधूपं
छुत्वा च तस्यै प्रेमचन्दनाक्तं पुष्पं मे कामनायाः।।15

इस प्रकार भट्टाचर्य जी ने सानेट को संस्कृत साहित्य में उतारकर विदेशी छन्दों की रचनाधर्मिता का सूत्रपात किया।
इसी श्रृंखला में हर्षदेव माधव ने सानेट को उसी भावभूमि में लिखकर संस्कृतसाहित्य को विश्वचेतना से जोड़ा है। द्रष्टव्य है –

सत्यं नहि प्रियतमो ननु वंचकस्त्वं
गुंजारवेण भ्रमसि भ्रमरोऽसि कान्त।
चादुशतं वदसि षटपद! पुष्पकर्णे
चुम्बितमिच्छसि कथं कुसुमस्य गात्रम्।।16

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी ने यद्यपि बहुलता से इस छन्द का प्रयोग नहीं किया है, परन्तु 'सन्धानम्' के लक्ष्य में 'सानेट' आ ही गया। उन्होंने दो सानेट सन्धानम् में लिखे हैं(17)। इससे प्रतीत होता है कि डॉ. त्रिपाठी अर्वाचीन छन्दोविधान के ऐसे सहयात्री हैं। जो विदेशी सभी छन्दों का सहज प्रयोग करने में सिद्धहस्त हैं।

5.2 हाइकु – जापानी काव्य विधा का सफल प्रयोग 'हाइकु' कहा जा सकता है। इसमें 17 अक्षरों का प्रयोग करके सूत्राके सदृश भावाभिव्यक्ति होती है। यह अक्षर 5.7–5 के क्रम में तीन पंक्तियों को त्रिगुणात्मक विश्वव्यापकता के साथ रखते हैं और 'हाइकु' को बिल्वपत्र कहना पसंद करते हैं।

हाइकु काव्यमपि चिचरणमयं तस्यापि त्रीणि चरणानि वर्तन्ते, अतः सूचयति त्रिगुण समन्वितं विश्वदर्शनप्रभुत्वम्। हाइकु–होडकु–सत्तरी–सत्तराक्षरी–त्रिदलं–बिल्वपत्रं इत्यादि बहूनि नामानि वर्तन्ते हाइकुमहोदयस्य। किन्तु बिल्वपत्रमेवाहं कथयिष्यामि।18

वस्तुतः कल्पना की दृष्टि से युक्त होने के कारण हाइकु कल्पनावादी कवियों के लिये एकश्रेष्ठ छन्द योजना है। परन्तु यह कल्पना पारम्परिक न होकर नवीनता लिये होती है, मेघ का इन्द्रधनुष के कंधे से बाल संवारना दृश्यकल्पना की मनोहारी योजना है –

इन्द्रधनुषः
प्रसाधनी मेघः केशान्
संस्कारयति।।19

एक अन्य हाइकु भी द्रष्टव्य है –

कॉलेज कन्या
सौन्दर्य मधुकोशः
रूपस्य प्रपा।20

महाविद्यालय की लड़कियां जो अपने पारदर्शक वस्त्रों के कारण **'रूप की प्याऊ'** बन गई हैं।

हर्षदेव माधव ने 'हाइकु की विविधता से भी पाठकों का परिचय कराया है। वे परम्परागत छन्द–शिखरिणी, शार्दूलविक्रीड़ित, स्रग्धरा, वसन्ततिलका आदि को भी हाइकू के स्वरूप में उतारने हेतु प्रयास कर रहे हैं।

शिखरिणी – **गतः सूर्यो हा!**
धिक्! तिमिरमभितः
रे! क्मलिनी ।21

यद्यपि अन्य कवियों ने भी 'हाइकु' पर कुछ प्रयोग किये हैं, परन्तु माधव के द्वारा लिखे गये हाइकु बहुत ही स्वाभाविक एवं मुखर हैं।

5.3 तान्का – तान्का शब्दों के इन्द्रजाल और अलङ्कार प्रधानशैली के स्थान पर शब्द संयोजन का जादू होता है। जापान में 'हाइकु' के अतिरिक्त काव्यस्वरूपों को 'वाका' कहा जाता है। इस 'वाका' में तान्का सबसे छोटा स्वरूप है। इसमें पांच पंक्तियाँ और 31 अक्षर हैं, लगभग चौथी सदी से इसका आरम्भ हुआ एवं सातवीं सदी में तान्का के रूप में स्थिरता मिली। आज भी जापान में वर्ष के प्रारम्भ होते समय उसके स्वागत में 'तान्का' ही पढ़ा जाता है।

डॉ. मधु कोठारी मतानुसार तान्का के तीन लक्षण हैं –

1. **कल्पना तत्त्व**
2. **संघट्टीकरण**
3. **सूचना (हाइफन, पृ. 46–47)22**

तान्का को कहीं–कहीं तंका, तन्का, टांका आदि भी कहा जाता है। परन्तु हर्षदेव माधव इसे 'तान्का' ही कहते हैं। स्त्राी की विवशता को सधे शब्दों में उन्होंने इसे 'तान्का' में व्यञ्जित किया है। हिरणी की विवशता शिकारी की पत्नी की विवशता बन जाती है –

हरिणी हता, व्याधेन निष्ठुरेण, सायं खादिता
सा फनश्च श्वसिति, व्याधवध्वा वक्षसि।23
आशु पुष्पिता, बोगन पुष्पलता, गन्ध रहिता
यथा हि अर्वाचीना, प्रसृताऽस्ति सभ्यता।।24

इस प्रकार हर्षदेव माधव के तान्का काव्य में नितान्त लाघवता से सशक्त अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती हैं।

5.4 सीजो (सिजो) काव्य – सीजो काव्य दक्षिण कोरिया को काव्य विधा है। इसका उत्स सिल्ला साम्राज्य (668–936) के प्राचीनतम गीत ह्यांगका एवं कार्यों राज्य के गद्य शैली के काव्यों में दृष्टिगत होते हैं। इसमें अर्वाचीन कोरिया के परम्परागत मूल्यों, उस देश के सौन्दर्य, लोगों की आकांक्षाएँ तथा राष्ट्र की विविध लाक्षणिकताओं की गहन अभिव्यक्तियाँ हुई हैं।

सीजो काव्य में वर्णों की संख्या न्यूनाधिक हो सकती है परन्तु कड़ी तीन पंक्तियों की ही होती है।

हर्षदेव माधव ने सीजो काव्य रचना की पहल करते हुए 1987 में सीजो काव्य का परिचय सुरभारती में इस प्रकार किया है –

''सीजो इत्याख्यः काव्यप्रकारः मया दक्षिणकोरियादेशस्य काव्य साहित्यदानीतः। अयं काव्यप्रकारोऽतीव प्राचीनो वर्तते। अयं प्रकारः स्वरूप दृष्ट्या अपूर्वोऽस्ति। अस्मिन् काव्यप्रकारे कोरियादेशस्य सौन्दर्यं जनानाभावेगः राष्ट्रभावना वीरता, परम्पराप्राप्तं गौरवं एतत् सर्वं कविभिः प्रकटीकृतम् हर्षदेव माधव के सीजो काव्य में 15+15+15 अक्षरों की तीन पंक्तियाँ मिलती हैं। आपने गीत, गजल, तथा अछान्दस तीनों ही काव्य स्वरूपों को इस छन्द से जोड़ दिया है।गजल के आवर्तन में प्रयुक्त सीजो दृष्टव्य है –

काकभ्रातः! गच्छतदूरं गच्छदुरं मे गृहात्
कोऽपि वीरो यो गतोऽस्ति
नैव निवृणो रणात।
व्योम्नि गृधाः! हा! हतास्मि
कङ्कणं भ्रष्टं करात्।।25

भाव की दृष्टि से सीजो काव्य प्रायः देशभक्ति, युद्ध, देशप्रेम के कारण बलिदान आदि भावनाओं एवं संवेदनाओं के पटल पर ही लिखे गये। हर्षदेव ने भी युद्ध विषयक सीजो का सृजन किया। द्रष्टव्य है –

कोऽपि वीरः क्षालयति निर्झरे करवालम्।
अन्तर्हिता वृक्षच्छाया रक्त रक्तं शैवालम्
शृणोत्युच्चकर्णो ह्यः रुदन्तं च शृगालम्।।26

6. मुक्त छन्द विधा – संस्कृत भाषा का अति विशाल और परिव्याप्त छन्दोवैचित्र्य वैदिक् छन्दों से लेकर गजल, सिजो, तान्का, हायकू आदि इतरभाषीय छन्दों से गुजरकर आज मुक्तक छन्दों के तट पर पहुँच गया है। आज केवल गद्य को पद्य में समेट लेना ही मुक्तछन्द की परिभाषा बनती जा रही है इस विषय में प्रो॰ गोविन्द चन्द्र पाण्डेय का कथन है –

''किन्तु प्रायेण हिन्दी भाषायां संस्कृते च मुक्तछन्द इत्स्यार्थमेव नाभीजानन्ति ते यथा कथंचित् गद्ये लिखन्ति, तदेव छन्दोमुक्तिं मन्यते, किन्तु तत्तु वस्तुतः काव्यादेव मुक्तिं ददाति।''

मुक्तछन्द की एतिहासिक पृष्ठभूमि में यह प्रयेगवादी साहित्य के आँचल में परिष्कृत एवं परिवर्तित हुआ है। प्रयोगवादी साहित्य का आविर्भाव भी सर्वप्रथम ंस में हुआ। इससे पारम्परिक काव्य सिद्धान्तों की अवहेलना हुई। 1900 ई॰ तक ंस में मुक्त छन्द का प्राधान्य हो गया। इसी के आसपास इंग्लैण्ड में पाउण्ड ने बिम्बवादी सिद्धान्त की स्थापना की। कविता में छन्दोमुक्त का अर्थ यह नहीं कि इसका कोई अनुशासन ही नहीं होता है। छन्दोमुक्त में यह अनुशासन बाह्य या यान्त्रिक न होकर आन्तरिक होता है वस्तुतः यह लय गत ही है। बहुत कम ही रचनाकार मुक्त छन्द वाले काव्य में

लयात्मक, छनदोमयात्मक अनुशासन का पालन कर पाते हैं। ऐसे सफल एवं सार्थक मुक्तछन्द प्रयोगधर्मी कवियों में केशवचन्द्र दास, हर्षदेव, बनमाली विश्वाल, वीरेन्द्र भट्टाचार्य, रवीन्द्रकुमार पण्डा, राजेन्द्र मिश्र , रमाकान्त शुक्ल नवीन हस्ताक्षर के रूप में नाम लिया जा सकता है।

केशवचन्द्रदास ने मुक्त छन्द के माध्यम से जीवन की विसंगतियों, परम्परा एवं आधुनिकता ने द्वन्द का सफलतापूर्वक चित्रण किया है –

निधि भवनस्य/अलिन्दे यथा/श्रूयते भौतिकता स्वरः/
विक्षिप्तदीनतासु च/चीत्करोति/शैलकल्पक्षपा/कमहं
श्राविष्यामि/प्रसूतिकाव्यथां मम्?27

राजेन्द्र मिश्र ने आधुनिक साहित्य के मुक्तछन्द से भी उतनी ही आत्मीयता से सम्बन्ध जोड़ा है। आपने अपनी रचना 'मधुपर्णी' में गजल और गीत के साथ एक खण्ड मुक्त छन्दों में भी लिखा है। इसमें लगभग अट्ठारह कविताएँ हैं जिनमें कहीं तो कवि की आत्माभिव्यक्ति है तो कहीं 'लोरी' के ब्याज से अपने बचपन की स्मृतियों की तारतम्यता है। उन्होंने राजनीति पर कटाक्ष करते हुये 'हवाला काण्ड' की चर्चा कुछ इस प्रकार की है –

काण्डात्काण्डं प्ररोहन्ती राजनीतिदूर्वा
हवालाकाण्डमधिरूढा
तत्संस्पर्शाच्च विषाक्ता संजाता
सम्प्रति दूर्वाभोजिनो राजनेतृकृष्णसाराः
विषमूर्छिताः प्राणव्यथां सहमानाः
स्वनियतिं प्रतीक्षन्ते।।28

इसी सन्दर्भ में बनमाली बिश्वाल को भी मुक्तछन्द का सफल सर्जक कहा जा सकता है। उनकी वेलेण्टाइन डे सन्देशः विषयवस्तु और छन्द दोनों दृष्टि से पूर्णतः अर्वाचीन हैं। द्रष्टव्य है–

वेलेण्टाइनदिवसेऽद्य/ कर्तुमीहे संगणकयन्त्रस्योपयोगम्
परमहं विवशोऽस्मि/ अन्तर्जाल मध्ये,
अन्विष्यामि न प्राप्नोमि/ प्रिये तव ई–मेल–सङ्केतम्।।29

हर्षदेव माधव मुक्तछन्द में क्रान्तिकारी चेतना कहे जा सकते हैं –

सखे सर्वमत्र, न किंचिदस्ति तत्र
जीवनं पत्रमिव पतिष्यति को जानाति कुत्र?30

जगन्नाथपाठक अपनी चुटीली अभिव्यक्तियों उक्तिभंगिमाओं और कथ्य के वैचित्र्य से पाठकों पर अपनी एकगहरी छाप छोड़ते हैं –

मम हृदभिक्षापात्रे स्मितकुसुमानीह कानिचित्सन्ति
बहु मन्ये परमेताम् अश्रुकणान् केनचिन्निहितान्।।31

राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने एक काव्य संग्रह का शीर्षक ही 'सन्धानम्' रखा है। इसमें इन्होंने मुक्तछन्दों का प्रयोग किया है –

नैवाहं कामये दीर्घ मरणं तु शनैः शनैः
पत्राणां चैव पुष्पाणां विट्पाद गलनं शनैः
वरं नश्यामि सहसा ज्वालाभिः कवलीकृतः
विकीर्णः कणशः सद्यो विलीये वलये भुवः।

पुष्पादीक्षित अपने व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों में बेजोड़ हैं। उनके काव्यों में मुक्तछन्दों की दृष्टि प्राप्त होती है –

वीतरागता यदा तदा गृहं वनायते
त्वं प्रतीयसे यदा तदा जगत् तृणायते
ये कषायवाससोऽपि मानसे कषायिताः
ते विशन्ति यत्र तत् तपोवनं रणायते।।32

इच्छाराम द्विवेदी ने भी अपने काव्य रचना में मुक्तछन्दों का प्रयोग किया है –

नीरक्षीरनिर्णयेषु वायसा निमन्त्रिताः
हंसकाः प्रयान्ति कर्दमेषु हन्त साम्प्रतम्।।33

वास्तविकता तो यह है कि कवि का स्वभाव प्रायः व्यंजनापरक ही होता है, अतः लघुभङ्गिमाएँ काव्य की आत्मा होती हैं परन्तु भङ्गीभणिति से काव्य

का श्रृंगार करना एक अलग धारा है। अतः व्यंजना तो प्रायः अधिकांश कवियों के कृतित्व में सजती रही है। परन्तु शब्दों की भङ्गीभणितियों से अपने काव्य अलंकृत करने वाले कवि अंगुलिगण्य हैं।

7. उपसंहार – 'क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति' पंक्ति को चरितार्थ करते हुए कवि समवाय ने प्राचीन एवं मध्य कालीन कवि परम्परा का अनुसनण करते हुए कवियों के हृदय से कविता रू॰ में प्रस्फुटित हो गंगा की धारा सदृश निश्छल भाव से प्रवाहमान होती हुई जनमानस के हृदय को सिंचित करती हुई ब्रह्मानन्द रूपी रस का रसास्वादन कराती हुई आधुनिक काल तक कविवाणी रूप में निरन्तर अविचल गति से प्रवाहमान है।

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है उसमें छन्दों पर किये गये नवप्रयोग भी उल्लेखनीय हैं। चाहे वह देशी छन्दों की बात हो अथवा विदेशी छन्दों के कवि ने छन्दशास्त्र की परम्परा से चार कदम आगे बढ़कर स्वयं को लोकधर्मी सिद्ध करने का प्रमाण किया है। छन्दोविधान के क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में सर्वाधिक नये प्रयोग किये गये।

आधुनिक कालीन कविपरम्परा में राजेन्द्र मिश्र, राधावल्लभ त्रिपाठी, जगन्नाथ पाठक, बनमाली बिस्वाल, प्रवीण पण्ड्या, इच्छाराम द्विवेदी, रेवा प्रसाद द्विवेदी प्रभृति आचार्य अग्रगण्य हैं। राजेन्द्र मिश्र ने लोकगीत, उर्दू के गजल को संस्कृत में लिखकर छन्द शास्त्र में एक नए युग का सूत्रपात किया है।

तथैव आधुनिक साहित्य में होने वाले निरन्तर प्रयोगों के फलस्वरूप विदेशी छन्दों ने भी संस्कृत में जो अपना बनाया है वह संस्कृत भाषा की श्री वृद्धि की ओर संकेत करता है। इस क्षेत्र में हर्षदेव माधव ने तान्का, सीजो, हाइकु आदि विदेशी छन्दों को लिखकर जनमानस को सुअवसर उपलब्ध कराया है। इसी छन्द परम्परा में आधुनिक कवि वर्ग ने समाज को भर्तृहरि, घनानन्द, भूषण आदि कवियों का अनुसरण करते आधुनिक काल में भी बनमाली बिस्वाल, राजेन्द्र मिश्र, इच्छाराम द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठी प्रभृति आचार्यों ने मुक्तक छन्दों को संस्कृत में नवप्रयोग कर एक नए युग का सूत्रपात किया है।

जयतु संस्कृतं जयतु भारतम्

सन्दर्भसं॰ सन्दर्भितग्रन्थ

1 प्रतानिनी, पृ॰102
2 रीतवीथी, 39–40
3 शालभंजिका –134/4
4 मृद्वीका, पृ॰–12
5 मधुपर्णी, राजेन्द्र मिश्र, 27/4
6 प्रणवरचनावली, इच्छाराम द्विवेदी, पृ॰ 247
7 वाग्वधूटी, राजेन्द्र मिश्र, पृ॰ 63
8 सन्धानम्, राधावल्लभ त्रिपाठी, पृ॰ 101–102
9 मृद्वीका, राजेन्द्र मिश्र पृ॰ 74
10 विंशतिशताब्दी, श्रीधर भास्कारवर्णेकर, पृ॰ 146
11 मृद्वीका, राजेन्द्रमिश्र, पृ॰ 76
12 संस्कृत के युगपुरुष, मंजुनाथ, पृ॰ 95
13 मंजुनाथ, संस्कृत के युग पुरुष, पृ॰ 88
14 अभिराजयशोभूषणम्, राजेन्द्र मिश्र, पृ॰ 267
15 संस्कृत साहित्य बींसवी शताब्दी, पृ॰ 104

16 हर्षदेव माधव, तव स्पर्शे स्पर्शे, पृ॰ 12
17 सन्धानम्, पृ॰ 44
18 सुरभारती, पृ॰ 17, 1984
19 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 15/161
20 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 49/501
21 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 6/54
22 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 87
23 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 64/60
24 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 66
25 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 70/3
26 हर्षदेव माधव, ऋषे क्षुब्धे चेतसि, पृ॰ 74/37
27 ईशा, पृ॰ 4
28 मधुपर्णी, राजेन्द्र मिश्र, पृ॰ 90
29 वेलेण्टाइन डे सन्देशः, पृ॰ 44
30 नीरवक्षर पृ॰ 08
31 आर्यसहस्रराममम्, 2/7
32 विंशतिशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्, पृ॰ 667
33 प्रणवरचनावली, पृ॰ 433